JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.JLPER.com

Published by iSaRa Solutions

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

कमल कुमार चौहान
शोधार्थी
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर

डॉ. सविता गुप्ता
प्रोफसर
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर

सारांश

वर्तमान समय में तेजी से बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य के कारण शिक्षा के ढांचे तथा उस पर बढती हुई मांग में भी काफी परिवर्तन होता जा रहा है। तेजी से बदलते परिवेश में प्रगतिशील शिक्षा या विद्यालयी पद्धति के कर्णधारों को छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करना अनिवार्य हो जाता है जिससे इस बात का अधिक से अधिक ज्ञान हो सके कि छात्र किन तरीकों से सीखते हैं तथा उन्हें क्या और कैसे सिखाया जाना चाहिए। वर्तमान गतिशील समाज की बदलती हुई घटनाओं के साथ समायोजन बिठाकर चलने के लिए भी शैक्षिक अनुसंधान की निरन्तर आवश्यकता है। निरन्तर शोध से व्यक्तिगत शिक्षक की शिक्षण योग्यता में सुधार से लेकर नये–नये विचारों तथा सिद्धान्तों के विकास तक के विविध प्रकार के लाभ मिल सकते है।

शैक्षिक उदेश्यों/लक्ष्यों को पूर्णरूप से प्राप्त करने तथा उपलब्ध साधनों का अधिकतम उपयोग करने के लिए भी गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों दृष्टि से शैक्षिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

कुंजी शब्द

प्रस्तावना, उदेश्य, परिकल्पना, परिसीमन, उपकरण, जनसंख्या, न्यादर्श निष्कर्ष

प्रस्तावना

पहले अध्याय में, अध्ययन की पृष्ठभूमि के पश्चात् सबसे महत्वपूर्ण कार्य सम्बंधित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक होता है। इसलिए शोधकर्ता भी इस अध्याय में प्रस्तुत साहित्य का अध्ययन करते है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन एक अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण आधार हातो है, जिस पर अनुसंधान का विशाल भवन निर्मित होता है। व्यक्ति संबंधित साहित्य का अध्ययन करके

ही अपने अनुसंधान को समर्थन प्रदान करता है। वास्तव, में शोध समस्या को समझने के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। संबंधित साहित्य का अध्ययन और सर्वेक्षण शोधकर्ता को नवाचारों के क्षेत्र में ले जाता है, जहां उसे अपने क्षेत्र से संबंधित निष्कर्ष और परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है, और यह स्पष्ट होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहां रिक्तियाँ हैं, कहां निष्कर्ष विरोध है, और कहां अनुसंधान की आवश्यकता है। जब एक शोधकर्ता दूसरे शोधकर्ताओं के अनुसंधान कार्य की समीक्षा और मूल्यांकन करता है, तो उसे अनुसंधान में उपयोग ज्ञान के स्त्रोतों का पता चलता है, जो उसके अपने अनुसंधान में सहायक हाते है।

अध्ययन

- पावीथरन और फिरोज (1965) ने पटना शैक्षिक क्षेत्र के दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने अध्ययन में यह पाया कि परिवार के शैक्षिक स्तर और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर परिवार के आर्थिक स्तर का कोई प्रभाव नहीं पाया गया। ग्रामीण क्षत्रे के विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की उपलब्धि अधिक पायी गयी। बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

- ठाकुर टी. (1974) ने बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव किस प्रकार पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिए उन्होंने बालकों की हाईस्कूल उपलब्धि और विद्यालय के वातावारण का अध्ययन किया। अध्ययन के लिए जोरहट शहर के कक्षा 8 से 11वीं कक्षा के छात्रों को चुना गया। इन छात्रों पर पॉच वर्ष तक अध्ययन किया। एक नियन्त्रित समूह को नियंत्रित किया गया। डेटा एकत्रीकरण के लिए व्यक्तिगत प्रश्नावली और छात्रों की अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया तथा टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध में समस्या की प्रकृति के अनुरूप निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अर्न्तमुखी एवं बहिर्मुखी निम्न व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों का अध्ययन करना।

3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यक्तित्व तथा उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध में निर्धारित उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएं (NullHypothesis) निर्मित की गयी तथा उसकी स्वीकृति या अस्वीकृति हेतु सार्थकता का स्तर 0.05 निर्धारित किया गया है।

H_{01} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

H_{02} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{03} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में क्षेत्र व लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{04} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में क्षेत्र व लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{05} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में क्षेत्र व लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{06} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

H_{07} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध का परिसीमांकन

शोध में परिसीमांकन से आशय अध्ययन क्षेत्र या कार्यक्षेत्र की परिधि से है जिसके अन्तर्गत रहकर ही शोधार्थी द्वारा शोध कार्य को सम्पन्न किया जाता है। प्रस्तुत शोध का परिसीमांकन निम्नलिखित रूप मं किया गया है–

1. प्रस्तुत शोध की जनसंख्या के रूप में राजस्थान के अलवर शहर के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

2. प्रस्तुत शोध में केवल हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों को ही शामिल किया गया है।

3. प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति जैसे चरों को अध्ययन में शामिल किया गया है।

4. प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों को क्षेत्र व लिंग के आधार पर विभाजित करके उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया हैं।

प्रस्तुत शोध में शैक्षिक सम्प्राप्ति के साथ अन्य चरों के सहसम्बन्ध का अध्ययन किया गया हैं।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि जनसंख्या की समस्त इकाईयों में से अध्ययन हेतु कुछ इकाईयों को एक निश्चित विधि द्वारा चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्शन (Sampling) कहते है, तथा चुनी हुई इकाईयों के समूह को न्यादर्श (Sample) कहते है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु 'यादृच्छिक न्यादर्शन विधि (Randam Sampling Method) का प्रयोग किया गया है, जिसके अन्तर्गत अलवर शहर में अवस्थित माध्यमिक विद्यालयों की को यादृक्षिक विधि द्वारा कुल 12 विद्यालयों को चुना गया।

अतः उपरोक्त विधि द्वारा प्रस्तुत शोध में न्यादर्श हेतु अलवर शहर के माध्यमिक

विद्यालयों में अध्ययनरत 600 विद्यार्थियों का चयन क्षेत्र व लिंग के आधार पर किया गया।

प्रयुक्त शोध उपकरण

शोधकर्ता के द्वारा संकलित आवश्यक सूचनाओं और प्रमाणों की सहायता के बिना किसी भी शोध समस्या के समाधान का उत्तर प्राप्त करना सम्भव नहीं हो पाता है। शोध समस्याओं का उत्तर प्राप्त करने में सहायक इन संकलित को ही अनुसंधान विधिशास्त्र की भाषा में 'प्रदत्त' या 'आँकड़ें' कहते है और इनको संकलित करने के लिए जिन तकनीकों या उपकरणों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें प्रदत्त संकलन 'तकनीक' या 'उपकरण' कहा जाता है। इन उपकरणों का चयन अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप किया गया हैं जिससे कि शोध समस्या के परिप्रेक्ष्य में एक सार्थक, विश्वसनीय व वैध निष्कर्ष निकाला जा सकें। प्रस्तुत शोध में प्रासंगिक आँकड़ों के संग्रह के लिए निम्नलिखित शोध उपकरणों का

उपयोग किया गया है जिनका विवरण निम्नानुसार है–

1. मंगल संवेगात्मक बुद्धि परिसूची–डॉ. एस. के. मंगल एवं डॉ. शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित।

2. अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व– आर.ए. सिंह

जनसंख्या

शोध में जनसंख्या से आशय उन समस्त इकाईयों के समूह से होता है जिनमें कुछ सामान्य विशेषताएं निहित होती है तथा जिनके सम्बन्ध में अनुसंधानकर्त्ता कुछ निष्कर्ष ज्ञात करना चाहता है। बेस्ट एवं काहन (2014) के शब्दों में, ''जनसंख्या व्यक्तियों का ऐसा समूह है जिसमें एक या एक से अधिक विशेषताएं सामान्य रूप से विद्यमान होती है और जो शोधकर्ता के लिए रूचि रखते है।'' प्रस्तुत शोध हेतु जनसंख्या के रूप में अलवर शहर के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का चयन किया गया।

शोध निष्कर्ष

प्रथम उद्देश्य से सम्बन्धित निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पायी गयी। द्वितीय उद्देश्य से सम्बन्धित निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च व्यक्तित्व के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति एवं निम्न व्यक्तित्व के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति लगभग समान थी अर्थात उच्च व्यक्तित्व के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न समायोजित आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों से अपेक्षाकृत आंशिक रूप से अधिक पायी गयी। तृतीय उद्देश्य से सम्बन्धित निष्कर्ष

- क्षेत्र के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

- लिंग के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में क्षेत्र व लिंग दोनों का संयुक्त अन्तर्क्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया।

- ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च थी।

- छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात छात्र की संवेगात्मक बुद्धि छात्राओं की अपेक्षा उच्च थी।

- ग्रामीण छात्र व ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर लगभग समान था।

- शहरी छात्र व शहरी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात शहरी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि शहरी छात्राओं की अपेक्षा उच्च थी।
- ग्रामीण छात्र व शहरी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर लगभग समान था।

- ग्रामीण छात्राओं व शहरी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि शहरी छात्राओं की अपेक्षा उच्च थी।

सन्दर्भ सूची

- अल्तेकर, अनंत सदाशिव (2014). प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति. वाराणसीः अनुराग प्रकाशन. पृ0 3.
- ओड़, एल.के. (2008). शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी. पृ0 1–2.
- कुमार, कृष्ण (2018). गाजीपुर जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर पर हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओ ंकी शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबंध, शिक्षाशास्त्र विभाग, वाराणसी : सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय.
- कुमार, नागेन्द्र (2007). माध्यमिक विद्यालयो ंमे ंअध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के छात्राओ ंके वातावरणीय समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि के परिप्रेक्ष्य में एक तुलनात्मक अध्ययन. न्यू डाइमेंसस इन एजुकेशनल रिसर्च, वाल्यम–6, पृ0स0ं 37–38.
- गोयल, निशी एव ंभार्गव, महेश (2015). सामाजिक एव ंव्यावहारिक विज्ञानो ंमे ंशोध विधियाँ एव ंसांख्यिकीय अनुप्रयोग. आगरा : राखी प्रकाशन प्रा0लि0।
- गैरेट, हेनरी; ई. वुडवर्थ, आर.एस.(2011). शिक्षा एव ंमनोविज्ञान मे ंसांख्यिकी. नई दिल्ली : कल्याणी पब्लिशर्स।
- गुप्ता, एस.पी. (2015). अनुसंधान संदर्शिका प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलका (2008). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलका (2003). सांख्यिकीय विधियाँ (व्यवहार परक विज्ञानों में) इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलका (2008). आधुनिक मापन एव ंमूल्यांकन. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन पृ0सं0 156, 158.

JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH